डायरी

कुछ चरित्र और प्रसंग

पाठ्यक्रम विकास में लोक-काव्य व नाटक की क्या भूमिका हो सकती है ? इनके माध्यम से विषयवस्तु (जैसे भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन) के सीखने सिखाने के अलावा व्यक्तित्व-निर्माण के लिए सकारात्मक गुणों को विकसित करने की क्या संभावनाएं हैं ? इन कुछ सवालों को लेकर लोक-जुम्बिश (जयपुर) और अलारिप्पु (दिल्ली) के संयुक्त तत्वाधान में एक अध्ययन किया गया ।

यह अध्ययन अजमेर जिले के अरांई ब्लाक के छह गांवों में किया गया, जहां लोक जुम्बिश के सहज शिक्षा कार्यक्रम में अलारिप्पु संस्था सक्रिय है । अध्ययन कर्ता थे : **विजय पाराशर, प्रभात** और **सुष्मिता बनर्जी**। इस अध्ययन की रपट से कुछ डायरी-अंश यहां उद्धृत किये जा रहे हैं ।

कुछ चरित्र

उस दिन दोपहर को हम गुंदाली गांव की ढाणी में थे । यहां आने के लिए हमें सड़क से उतर कर कच्चे रास्ते से दो छोटे-छोटे कांकड़ों को पार कर आना पड़ा था। पैदल चलने की थकान हमारे पैरों में थी । घर सब सूने पड़े थे । ये सरसों की लांवणी के दिन थे । ढ़ाणी में ऐसा निर्जन पड़ा देखकर मन में उत्साह का अभाव लिये हम घरों के आगे से उम्मीद से झांकते हुए गुजर रहे थे । एक पौड़ में अजवाइन छड़ रही प्रौढ़ स्त्री ने हमारा अजनबी डौल देखकर हमें बुला लिया। मामूली आपसी परिचय के बाद हमने कहा, हम लोकगीत ढूंढ़ रहे हैं । पहले तो वह हंसी फिर कहा - ''मोकड़ा सुणा देऊं'' यानी बहुत सुना देगी । हम पौड़ में बैठ गए। इतने में एक और वृद्धा लाठी टेकती-टेकती वहां आयी । उसे छांह काटती थी इस कारण वह थोड़ी दूरी पर धूप में बैठी बैठी हमारी बातें ध्यान से सुनती रही । इस 60 वर्षीय वृद्धा का नाम करमा था। जब अजवाईन छड़ रही स्त्री के गीत बीत गये तो करमा ने इस बीच वहां आयी दूसरी गूजर स्त्रियों से हमें गीत बता देने का आग्रह किया। उसका मानना था कि हम जाने कहां से चलकर सिर्फ गीतों के लिए ही यहां आये हैं तो उन्हें हमें बताना चाहिये । ऐसा उसने अपनी बोली में उन स्त्रियों से कहा । पर जब वहां उपस्थित सब स्त्रियों की स्मृतियां जबाव दे गई तो करमा हमें अपने घर ले गई। लांवणी के दिनों की गंध चारों ओर फैली हुई थी । करमा का घर भी सब घरों की तरह प्राय: जन-शून्य था । उसने पौड़ी के किवाड़ भीतर से बंद कर लिये । भीतर बाखड़ में खुले में हमारे लिए खाट बिछायी और स्वयं नीचे जमीन पर बैठ गई। हमारे बार-बार आग्रह करने पर भी वह वहीं बैठी रही । उसने बताया कि उसके वृद्ध पति का निधन हुए अभी एक महीना भी नहीं बीता है । वह सबके सामने गीत बताती तो ढाणी की स्त्रियां बातें बनाती। फिर उसने जैसे वह अपराध-बोध से ग्रस्त हो, धीरे से कहा - ''मैं गाती हूँ । तुम लिख लो । '' फिर एक के बाद एक कई गीत हमें लिखाये। लिखते-लिखते तीसरा प्रहर हो गया था । धूप फिर से नरम पड़ने लगी थी। हम थक गए पर वृद्धा करमा बैठी-बैठी लगातार हमें बताती रही और बिल्कुल भी नहीं थकी । हमने कहा- हम फिर आ जाएंगे । उसने गंभीरता से कहा कि हम कभी भी आ जायें वह हमें और गीत लिखा देगी।

• • •

धूप और दिनों की अपेक्षा तेज थी । समय था दिन के लगभग बारह-एक के आस-पास का। सांपला गांव में हम किसी ठीक-ठाक सी जगह की टोह में चलते गये । चलते गये तो गांव ही सारा निकल गया पर ऐसी जगह नहीं दिखायी दी जहां से उम्मीद की जा सके । अब जबकि हम गांव के बाहर खड़े थे । खड़े-खड़े यूंही इधर-उधर देखने लगे । सामने कुएं पर इंजन चल रहा था । गेंहुओं में पानी जा रहा था। स्त्रियां, पुरुष बच्चे नहा रहे थे । स्त्रियां गदूलिया धो रही थी । हम यह तय करने जा ही रहे थे कि अब किधर मुड़ें । इतने में दोनों ओर बाड़ों के बीच में बने कूड़ा-कर्कट से भरे हुए कच्चे रास्ते में दो किशोर नंगे-पांव आते हुए दिखाई दिये। हमने लोक कथा-कविता के किसी जानकार के बारे में पूछते हुए उनसे कहा-तुम कुछ जानते हो तो तुम भी बताओ । पर एकदम अजनबी व्यक्तियों के इस अजनबी ढंग के काम में वे एकाएक रुचि नहीं ले पाये और ना-नुकुर करके गायब हो गये । पर इनमें से एक-चौदह वर्षीय मोहन लाल बैरवा जल्दी वापस हमसे आ मिला ।

लगभग दो बजे सांपला में ही गांव में काफी अन्दर हम एक

जन-शून्य मकान के आगे टीन के नीचे थककर बैठ गये थे। सरकारी स्कूल के बच्चों की छुट्टी हो गई थी । अब हम गांव के दो चार लोगों और स्कूली बच्चों से घिरे थे और जैसे-जैसे सामग्री आती जाती थी, लिखते जा रहे थे । पता नहीं कब से मोहनलाल वहां था और हमारा तेज-तेज लिखना देख रहा था। उसने संकोच से कहा वह भी लिखायेगा । हमने कहा- लिखाओ । उसने जिस ढ़ंग से कहानी सुनायी उससे दंग रह जाना पड़ा । उसके कहानी कहने में ठेठ देहाती तजुर्बा था । एक कहानी सुनाने के बाद अब वह काफी खुल गया था । इस बीच उसने यह भी बता दिया था कि इलाके के चलन के अनुरूप अन्य अधिकांश बच्चों की तरह उसका भी बाल-विवाह हो गया है । अब वह टपूकड़ा के डर की कहानी सुना रहा था । उसने पूरे हाव भाव के साथ कहानी सुनाना शुरू किया। भय-विस्मय और गति के दृश्यों को उसने ऐसे चित्रात्मक ढंग से सुनाया कि हम निरन्तर कथा रस में डूबते-उतराते रहे । सियार द्वारा शेर को डराये जाने को उसने इस ढंग से अपने घुटनों पर थाप देकर जोरदार हांक लगाते हुए सुनाया - ऐ रे क जड़ बांदड़ राजा। ऐरेक न्हार कि न्हार आ जाय र वा जाय पूंछड़ी उठार कर भागने को वाक्यों की तेज गति द्वारा बताना कि न्हार आ जाय र वा जाय पूछड़ी उठार । क डरपग्यो ऊ तो ।... उसके इस तरह हाव भाव के साथ सुनाने ने हमें हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर दिया। सब कागज पत्तर बिखर गये । पेन जाने किधर गिरा । अन्य बच्चे व व्यक्ति भी खूब हंसे ।

इस तरह कोई-कोई दिन होता जब सारे दिन में देखे गये दृश्यों व मुलाकातों पर कोई एक जगह, कोई एक मुलाकात इस कदर छा जाती कि बार बार उसकी ही याद आती ।

• • •

सामने का दृश्य सूपा गांव में तालाब की पाड़ का है । दो बच्चियां धूप में खेल रही हैं । इधर आओ क्या नाम है तुम्हारा- हम पूछते हैं । वह पास आती है और बताती है - किरण । अच्छा किरण यह बताओ तुम किस क्लास में पढ़ती हो ? ''तीसरी में''।

अरे वाह ! छोटी सी तो हो और तीसरी में पढ़ती हो ? क्या उम्र है तुम्हारी ? - नौ वर्ष । कौन से स्कूल में पढ़ती हो ?

स्कूल की तरफ हाथ से इशारा करती है । शरमाते हुए मुस्कराती है और चेहरे को कोहनी से ढंकती है । अच्छा किरण तुम कोई गीत, कहानी, कविता सुना सकती हो ? आसमान में झांकते हुए सोचती है । उकडूं बैठी हुई घुटनों को इधर उधर हिलाते हुए बताना शुरू करती है ''एक डेकण ही...।'' हम लिखना शुरू करते हैं । बीच बीच में और भी बच्चे उधर से गुजर रहे हैं । वह उन्हें देख कर शरमाती है और बताती जाती है । कहानी पूरी होती है ।

अच्छा किरण और कोई कहानी ?

ऐक ऊंदरी और एक डेकण ही ।... से शुरू कर बहुत बढ़िया ढंग से किरण ने पूरी कहानी सुनायी । तुम्हें किसने सिखाई ये कहानियां ? 'बुआ सिखायी । रात मअ सोती जद । दुवाड़ी ही न जद छुट्या कौने ही कं । जद सुणायी ।'' कितने भाई बहन हो किरण तुम ? ''पांच'' । पिता क्या करते हैं ? ''मील म्अ जावै।'' माँ ?

''मशीन चलावे ।''

इतने में किरण की मां या भाभी कोई परात सिर पर रखे उधर से गुजरी । किरण एक दूसरी बच्ची की ओट हो गई । उस स्त्री के जाने के बाद किरण ने कहा, उधर वहां चलो तो वह और बतायेगी। लेकिन उसके बताये गीत, कहानियां, कविताएं लिखते-लिखते हाथ खूब थक गये थे ।

अच्छा किरण फिर लिखेंगे - हमने कहा । ''अच्छा'' - कहने के भाव चेहरे पर लिये वह मुड़-मुड़ कर झांकती हुई खेतों में बने अपने बाड़े की ओर चली गई ।

एक प्रसंग

जिन दिनों हम नाटक लेकर गये, वहां मौसम लगातार खराब बना हुआ था । अन्धड़ आते थे । बारिश होती थी । हमें जिन केन्द्रों पर नाटक करने थे वे रात्रि में चलते थे । जिन बच्चों के साथ नाटक करने थे वे सबके सब कृषक - परिवारों के बच्चे थे । कृषक - परिवार बारिश की लगातार और-और बढ़ती जा रही आशंकाओं के कारण गेहूं, चने की लावणी को लेकर चिन्ता में डूबे हुए थे । इस सबका प्रभाव केन्द्रों पर आने वाले बच्चों पर भी पूरी तरह पड़ रहा था । सबके सब बच्चे दिन भर खेतों में लावणी कराते या गाय-बकरियों को रोकने के लिए खेतों में रहते । बच्चियों को मांओं के खेतों पर देर तक काम करते रहने के कारण रात्रि का खाना बनाना होता । वे सांझ होने पर घर आकर खाना बनाने में जुटती । अनुदेशक कैलाश जी अंधेरे में उन्हें आवाज लगाते । घरों से बुला कर लाते । केन्द्र कैलाश जी के घर में ही चलता था । वहां हम

इकट्ठा होते । बेहद तंग जगह थी वह। घर में घुसते ही छोटी सी पौड़ थी । पौड़ में गाय बंधती और वहीं चूल्हा था । घर के नाम पर सिर्फ एक कच्चा पक्का हॉल सा था जिसमें चक्की लगी हुई थी। अनाज बोरियों, आटे के पीपों और कैलाश जी की गृहस्थी के सब सामान के बाद थोड़ी सी ही जगह बचती जिसमें हम बैठते। नाटक करने के लिए भी इसी जगह से काम चलाना था ।

नाटक था, तालाब सूख गया। हिन्दी में था । बच्चों को संवाद बोलने में कोई मुश्किल नही हुई । सभी बच्चों ने तन्मयता से काम किया। उनसे पूछा हमने कि कठिन तो नहीं लगा ? कोई दिक्कत तो नहीं हुई करने में ? पारवती ने कहा-''कुछ भी दिक्कत नहीं आयी । मजा आया बहोत ।'' अच्छा क्या लगा बताओ ? उन्होंने कहा - ''हमें फूल, पेड़, बादल बनना अच्छा लगा । टिंया टिंया करने पर ।'' सुनीता को कविता बहुत अच्छी लगी । यह पूछने पर कि नाटक समझ में कितना आया । पारवती ने कहा - ''समझ में तो आया परन्तु एक बार और ।'' एक नाटक को एक ही केन्द्र पर दो दिन एक-एक घण्टा किया था। दूसरे दिन बच्चों ने अपने आप संवाद बोले और अभिनय किया । चम्पा ने हवा बनने में पहल करते हुए रुचि दिखाई । नाटक खत्म हुआ तब जैसा कि बिखरने पर बच्चे किया करते हैं, सुनीता ने कागलिया बनने वाले बच्चे से कहा ''ऐ कागलिया, डाली पर बैठ जा, जा ।''

चलते हुए क्रम में तय कार्यक्रम के अनुसार हम फागी ब्लाक के गांव-बांसड़ी जोगियान के प्राथमिक विद्यालय पहुंचे । जहां हमने अध्यापकों से कार्यक्रम की चर्चा के बाद कक्षा-4 के उपस्थित 12 बच्चों के साथ, परिचय आदि के बाद हंसी ठहाकों के बीच नाटकों के सन्दर्भ में चर्चा शुरू की । ये बच्चे हम लोगों से बहुत झिझक रहे थे । इनके साथ इन्हें खोलने के लिए कई गतिविधियां की, दो छोटे-छोटे खेल किये, चुटकुले कहे और एक छोटी सी कहानी और एक कविता कही । अब लड़के तो काफी हद तक खुल चुके थे । हमने नाटक के लिए तैयारी शुरू की । इन बच्चों में से पहल कोई नहीं कर पा रहा था । इसके लिए भी हमने कई तरह अभिनय करके बताया, संवाद बोले । उसके बाद बच्चे हमारे बताये अनुसार कर पा रहे थे ।

नाटक तैयारी की प्रक्रिया कुछ इस तरह रही कि हमने कहा कि बताओ गाय कैसे रंभाती है, काफी बच्चों ने अपने-अपने अनुसार बताया । इसी बीच एक लड़का बोला, ''अयों भी कोई गाय रंभावै कांई'' । हमने उस बच्चे से पूछ ही लिया कि बताओ तो कैसे रंभाती है। उसने दबी आवाज में गाय के रंभाने जैसी ध्वनि निकाली। इस बीच बाकी बच्चे भी गाय के रंभाने को बोल-बोल कर देख रहे थे । मगर उनकी आवाजें इतनी धीमी आ रहीं थी कि पास बैठा बच्चा भी ठीक से नहीं सुन सके ।

एक लड़के को खड़ा किया गया कि बताओ गाय कैसे चबाती व जुगाली करती है । वह लड़का थोड़ा-सा मुंह को चबाकर शरमाकर बड़ी तेजी से अपने स्थान पर जा बैठा । इस समय दूसरा कोई भी बच्चा खड़ा होकर बताने को तैयार नहीं हो रहा था । हमने उन्हें गाय के जुगाली करने की एक्टिंग करके बतायी - 'यांई यांई यांई' - इस पर सभी बच्चे खूब हंसते रहे । हमने कहा कि ऐसे कौन करके बताएगा । कोई नहीं बताना चाह रहा था । इस समय एक लड़का हिम्मत करके खड़ा हुआ और यांई-यांई कोई आई-आई करने लगे । इस तरह तैयारी खण्ड़ों में होती रही ।

इस ग्रुप में चार लड़कियां भी थीं । वे तैयारी में पहले खुल नहीं पा रही थीं । शर्म इतनी कि बस उनसे कुछ करने को कहे तो शरमा के हथेलियों से चेहरे को भींचना और सिमट कर रह जाती थी । इनके साथ काफी मेहनत की । इन के साथ-साथ डायलाग बोलते रहना और एक्टिंग करते रहना काफी देर तक, उसके बाद ये लड़कियां खुलीं । इनमें से एक लड़की तो अंत तक नहीं खुल सकी। और एक लड़की नीतू जो कि बहुत ही शर्मीली लड़की थी, वह इतनी खुली कि बाद में लड़कों तक को गाइड करने लगी । उन्हें कहने लगी कि सांप कांई खांहे जियां ऊंदरा (चूहा) मैंढ़क खावै तो तू मां का पाछै भाग पकड़वाने । यह लड़की बोलती बहुत संतुलित है, जैसे खुद के रोल में ''चींचीची... ये गड़प गड़प क्या लगा रखा है - एक वो मिले थे यांई-यांई करते हुए और एक तुम'' यह इतना लम्बा डायलॉग बड़े ही सजीव ढंग से बोलती । दो लड़के और एक लड़की अन्त तक भी खुल नही सके हालांकि इन तीनों ने शरमा कर सभी के साथ अपना-अपना अभिनय पूरा किया ।

सभी बच्चों को गड़प-गड़प करना और यांइ-यांई करना अच्छा लगा। लगभग सभी बच्चों ने अपना अपना काम बखूबी किया। और एक बात यह रही कि बच्चे बतलाये गये संवाद के शब्द बदलते थे मगर आशय वही रखते थे । इन बच्चों के साथ ज्यादा मेहनत करने के पीछे खास बात जो हमें लगी कि इन विद्यालयों में बच्चों के साथ सामान्यतया नाटक नहीं किये जाते । इस नाटक को कराने के बाद अध्यापकों से बात हुई । उनका कहना था कि वाकई नाटक बहुत अच्छा रहा । कह रहे थे-आपने इतनी सी देर में इतनी आसानी से इन बच्चों को जीव जन्तुओं की भोजन संबंधी प्रक्रियाओं को बता दिया। इन्होंने करके देखा है । वास्तव में यह एक अच्छा प्रयास है । ◆